पेनक्रिएटाइटिस

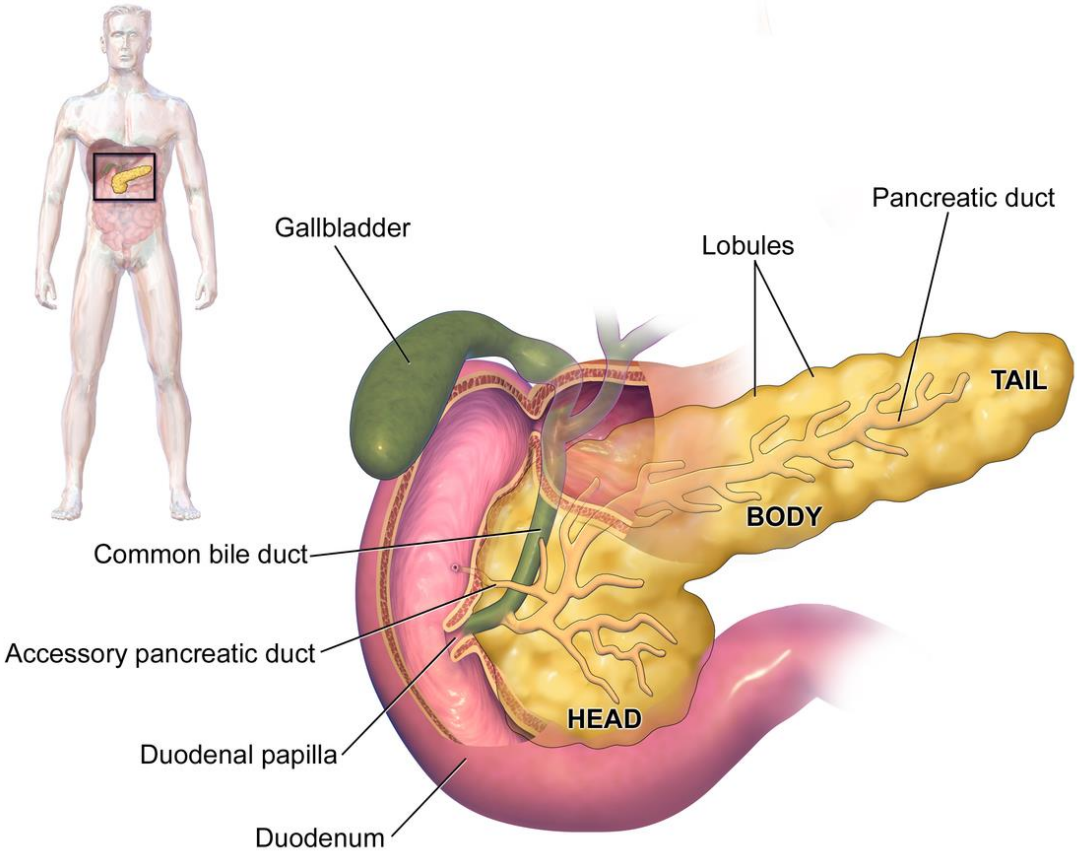

पेनक्रिएटाइटिस क्या होता है?

अग्नाशय ग्रंथि के सूजन को पेनक्रियाटाइटिस या अगनायाशोठ कहा जाता है ।

अग्नाशय या पेनक्रियास सामान्यतः दो कार्य करता है –

1)भोजन को पचाने के लिए उत्प्रेरक यानी कि एंजाइम बनाना ।

2)शरीर के ग्लूकोज को नियंत्रित करने वाले हार्मोन इंसुलिन एवं ग्लूकागौन बनाना ।

पेनक्रिएटाइटिस के प्रकार

1) तीव्र (अल्पकालिक) जिसे एक्यूट पेनक्रिएटाइटिस कहा जाता है जेा की दवाइयों द्वारा ठीक किया जा सकता हैद्य मगर गंभीर होने पर यह प्राण घातक भी हो सकता है ।

2) दीर्घकालिक जिसे क्रोनिक पेनक्रिएटाइटिस कहा जाता है यह तीव्र वाले प्रकार के बार–बार होने से या ठहरने से होता है जिसके पेनक्रियास हमेशा के लिए खराब हो जाता है ।

पेनक्रिएटाइटिस के लक्षण

तीव्र –

1)मध्य या तीव्र गति का पेट दर्द होना ।

2)उल्टी होना या जी मचलना ।

3)सांस भरना ।

4) ब्लड प्रेशर कम होना ।

5)गंभीर स्थिति में हृदय गति तेज होना ।

6) बुखार रक्तस्राव ऑक्सीजन लेवल कम होना ।

दीर्घकालिक –

1)पेट में लंबे समय तक होने वाला दर्द ।

2)तीव्र दर्द ।

3)मल में बदबू या वास की मात्रा ज्यादा होना ।

पेनक्रिएटाइटिस के कारण

1)ज्यादा शराब का सेवन करना ।

2)पित्ताशय की पथरी ।

3)दर्द की दवाइयां का अत्यधिक सेवन करना ।

4)शरीर में वसा यानी कि कोलेस्ट्रॉल की अत्यधिकता ।

पेनक्रिएटाइटिस की जटिलताऐ

अल्पकालिक पेनक्रिएटाइटिस – तीव्र या अक्यूट मे हृदय, फेफड़े या गुर्दे सदा के लिए कार्य करना बंद कर सकते हैं ।

दीर्घकालिक या क्रॉनिक –

1)पाचन प्रक्रिया हमेशा के लिए खराब हो सकती है ।

2)मधुमेह की बीमारी हो सकती है ।

3)कैंसर की बीमारी हो सकती है ।

पेनक्रियाटाइटिस की जांच

1)खून की जांच – ब्लड शुगर, एंजाइम जैसे अमायलेस एवं लाईपेस

2)सोनोग्राफी

3)सीटी स्कैन

4)एम आर आई

पेनक्रिएटाइटिस का इलाज

तीव्र (अल्पकालिक) – शरीर में तरल पदार्थ की मात्रा को ठीक किया जाता है जिसके बाहर से तरल पदार्थ नसों के द्वारा शरीर में पहुंच जाते हैं द्य संक्रमण होने पर एंटीबायोटिक लगाए जाते हैं द्य दर्द निवारण दवाई दी जा सकती है और पेट में अत्यधिक पानी भरने या पस होने पर ऑपरेशन की आवश्यकता पड़ सकती है ।

दीर्घकालिक (क्रॉनिक) – अधिकतर मरीजों में पेनक्रियास में खराबी पाई जाती है जिसके लिए ऑपरेशन की आवश्यकता पड़ती है

पेनक्रिएटाइटिस से कैसे बचा जाए –

1)शराब का सेवन न करें

2)धूम्रपान न करें

3)दर्द निवारण दवाइयो का सेवन अत्यधिक ना करें

4)पित्त की थैली में की पथरी का समय पर इलाज कराये

5)मधुमेह का इलाज